गुडलक के इतने सामान;
फिर भी कंगाल और परेशान

तुम्हारे अटूट विश्वास, अवचेतनमन एवं ब्रह्माण्ड में छुपे हुए आकर्षण के नियम
के बीच न परमात्मा अड़चन है, न भाग्य और न कोई ग्रह।
हम जो विश्वास करते हैं, हम वही रचते हैं!
What we believe, that we create!

इस धरती पर जो भी इंसान जन्म लेता है उसे समाज और लोगों के साथ जीना ही पड़ता है और जितना हम लोगों के साथ जुड़ते चले जाते हैं, संबंधों का विस्तार करते हैं चाहे वह व्यक्तिगत हो, पारिवारिक हो, व्यावसायिक हो या फिर राजनैतिक हो हमें हरेक व्यक्ति की अलग विचारधारा का सामना करना ही पड़ता है। चाहे वह सकारात्मक हो या नकारात्मक। जीवन समुद्र मन्थन की तरह है जिसमें अमृत और विष पैदा होंगे ही, आप इससे बच नहीं सकते। इससे तो देवता तक नहीं बच पाए, स्वयं श्रीराम, श्रीकृष्ण, बुद्ध इत्यादि को भी इसे भोगना पड़ा।

बचपन से लेकर बुढ़ापे तक जब हम हज़ारों तरह की शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, व्यावसायिक, समस्याओं से जूझ रहे होते हैं तो ऐसा लगता है कि काश कोई ऐसी जादू की छड़ी मिल जाए, कोई ऐसा सहारा, कोई ऐसा समाधान-उपाय जिससे कुछ प्राप्त हो या अपने आपको बचा लें - यह स्वाभाविक मानवीय प्रवृति है। आदमी चाहे जितना हिम्मतवाला हो, भगवान का भक्त हो, रोज़मर्रा की सांसारिक समस्याओं के आगे कमजोर पड़ ही जाता है और इन्हीं कमजोरियों से पैदा होती है 'गुडलक सामग्री' स्वास्थ्य, समृद्धि, शांति एवं संबंधों के वास्तविक ब्रह्माण्ड के नियमों की जानकारी के अभाव में घोर अज्ञानता के कारण हम अनेक प्रकार के भ्रम एवं भय के साथ जी रहे हैं व असहाय महसूस करते हैं। हमारी इस कमजोरी का पूरा भरपूर लाभ ज्योतिष, पंडित, पुरोहित, तांत्रिक, गुरू, बाबा, व्यावसायिक लोग उठाते हैं और हमें सांत्वना/उपाय की मृग मरीचिका दिखा कर आसानी से जेब खाली करवा देते हैं और हम भी अज्ञानता के कारण सब कुछ उन पर न्यौछावर करने को राज़ी हो जाते हैं। इसी भय और अज्ञानता की उपज हैं हजारों तरह की गुडलक सामग्रीयाँ।

एक बात तो साफ है कि हमारे और प्रकृति, परमात्मा के बीच व्यापारी आना चाहता है, एक ऐसा एजेंट आना चाहता है जो हमें अपनी इच्छानुसार भटका सके और पैसे कमा सके। हमारी अज्ञानता भय और कमजोरियों ने इन लोगों को इतना प्रोत्साहन दिया है कि आज गुडलक सामग्री विश्व भर में अरबों-खरबों की इंडस्ट्री का रूप ले चुकी है। हम इनके पोषक हैं, और ये हमारे पेरासाइट (धनचूसक) है। भारत, नेपाल, तिब्बत या विश्व के किसी भी देश में चले जाएँ हजारों दुकानों पर आपका सौभाग्य बनानेवाली, समृद्धि बढ़ानेवाली, रक्षा करने वाली, सामग्रियाँ मिल जाएँगी और हम भी इन्हें खोज रहे होते हैं। विश्व में सबसे ज्यादा ऐसी चीजें भारत में मिलेंगी। हर मंदिर में, हर तीर्थ में, हर ज्योतिषी, हर पंडित के पास, सामान्य दुकानों में भी और मज़ेदार बात तो यह है कि इतनी ढ़ेरों गुड़लक सामग्रियाँ सदियों से भारत में बेची जा रही हैं परंतु भारत आज भी समृद्धि को नहीं छू पा रहा है, गरीबी और अभाव से ऊपर नहीं उठ पा रहा है। आज हम सबसे बड़े अध्यात्मिक देश होने के बावजूद भी सबसे ज्यादा बदहाल हैं। हम आज

तक ईमानदार, अनुशासन प्रिय, जिम्मेदार और सफाई पसंद नहीं हो पाए। हम विश्व के पिछड़े देशों में गिने जाते हैं, नेपाल और तिब्बत जैसे देश तो महा कंगाली और गरीबी में जी रहे हैं। ये देश तो भारत से भी ज्यादा पिछड़े हुए हैं। ये अकाट्य सत्य है कि जो हमारे भीतर होता है वही बाहर घटता है। उपरोक्त सब नकारात्मक आदतें हमारे भीतर हैं। गरीबी व अभाव हमारे मन में है और जब तक वहाँ बदलाव नहीं आएगा, बाहर भी बदलाव नहीं आएगा।

क्या यह आश्चर्यजनक तथ्य नहीं है कि सबसे बड़ा श्रीयंत्र (लक्ष्मी देने वाला) भारत में हैं और यह यंत्र एक नहीं, दो नहीं लाखों की तादाद में मिलता है। कहाँ है लक्ष्मी और समृद्धि? सबसे ज्यादा विश्व में लक्ष्मी की पूजा भारत में होती है, हर घर में होती है और गरीब के घर में ज्यादा होती है। हम लक्ष्मी को बुलाने के सारे तामझाम करते हैं, दिवाली मनाते हैं, घर सजाते हैं परंतु लक्ष्मी भी ऐसी है कि इतनी चापलूसी के बावजूद भी हम पर कृपा नहीं करती, भारत पर कृपा नहीं करती। वह अमेरिका, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, स्वीट्ज़रलैंड, न्यूजीलैंड, दुबई, अरब जैसे धनाढ्य देशों पर जमकर कृपा बरसाती है, जो लक्ष्मी, श्रीयंत्र का नाम तक नहीं जानते, उसका नाम तक नहीं लेते। वही लक्ष्मी उन पर मेहरबान रहती है। फिर भी हमारी आँखें नहीं खुलती, हमारे अंधविश्वास नहीं टूटते। पता नहीं किस आशा में हम कोल्हू के बैल की तरह अपनी आदतें यंत्रवत-दोहराए चले जाते हैं?

हमारे यहाँ बड़े-बड़े महात्मा हैं, सिद्ध पुरूष हैं, साधक हैं, शक्तिशाली कहे जाने वाले मंत्र हैं, तंत्र हैं, बीज मंत्र हैं, तांत्रिक शक्तियाँ हैं, यज्ञ के बड़े-बड़े तरीके हैं, सैकड़ों तीर्थ हैं, महातीर्थ हैं, प्राचीन ग्रंथ हैं, ढ़ेरो गुड़लक सामग्रियाँ है, त्रिकालदर्शी हैं, बड़े-बड़े भविष्यवक्ता है, भाग्य बनाने वाले टनों रत्न और नग हैं, भगवान की बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ हैं। भगवान को रात-दिन मनाने की जद्दोजहद चल रही है लेकिन परमात्मा है कि मानता ही नहीं। ग्रहों को शांत करने के लिए एजेंट और साधन हैं फिर भी भारत के खस्ता हाल हैं। हमारी आंतरिक कुव्यवस्था, गरीबी, गंदगी, गैर-जिम्मेदार प्रवृति, भ्रष्टाचार, स्वार्थ, बेईमानी, मुफ्तखोरी हमारी रग-रग में भर चुकी है। सदियों से ये अंधा खेल भारत में चल रहा है परंतु हम हैं कि जागते ही नहीं, जागने में हमारी कोई रूचि भी नहीं।

वो लूटने को तैयार हैं-हम लुटाने को तैयार हैं; इसलिए हम सब, एक दूसरे के यार हैं।

गुडलक सामग्री वाले सब व्यापारी, समृद्धि, सौभाग्य का दावा करते हैं। खरीदने वाला समृद्ध हो न हो, बेचने वाले का तो भाग्य अवश्य खुल जाता है, वह जरूर समृद्ध हो जाता है। भारत में आज सबसे ज्यादा अमीर ज्योतिषी, बाबा, गुरू, तांत्रिक एवं इसके व्यापारी हैं। मिस्र देश मे जहाँ विश्व में सबसे बड़े पिरामिड बने हैं- वही मिस्र देश आज समृद्ध देशों में गिना तक नहीं जाता और हम हैं कि घर में चारो तरफ पिरामिड चिपकाए जाते हैं।

जयपुर में श्रीयंत्र बनाने वाले कारीगर आज तक 500/- रूपये से ज्यादा दिहाडी नहीं कमा पा रहे हैं और इसे बेचने वाले दुकानदार की दुकान भी सालों से वहीं की वहीं है। जिस दुकान में गुडलक के ढेरों सामान भरे रहते हैं उसका मालिक खुद अपने व्यवसाय को किसी तरह चलाने के लिए, बढ़ाने के लिए संघर्षरत रहता है।

मंदिरों में बीज मंत्र पढ़ने वाला पंडित, 24 घंटे मंत्रोच्चार, आरती, यज्ञ करने वाला पींडित आज तक अपने स्वार्थ, गरीबी और बदहाली से ऊपर नहीं उठ पाया। 24 घंटे भक्ति करने वाला सेवक रोटी, कपड़ा और मकान से ऊपर नहीं उठ पाया। जब ये सब समृद्धि के अंगूर को नहीं छू पाते हैं, तो वैराग्य, संन्यास, निरासक्त जैसे बड़े-बड़े आदर्शवादी शब्दों का इस्तेमाल कर धन, संसार आदि को, माया-मोह बताकर चालाकी से अपना बचाव कर लेते हैं।

इस धरती पर जो कुछ भी घटित हो रहा है वह आपकी इच्छा, कल्पना, विचार, विश्वास, कर्म एवं ब्रह्माण्ड के नियमों के आधार पर घटित हो रहा है। परमात्मा कहीं पर भी बीच में नहीं है। जब धरती पर कुछ नहीं था तब भी वह

बीच में नहीं था। आज धरती पर बहुत कुछ है तो भी वह बीच में नहीं है। धरती पर हर तरह की भौतिकवादी रचना के लिए मानव जिम्मेदार है, परमात्मा नहीं। कल आप धरती पर मनचाहा विकास करेंगे तो भी परमात्मा बीच में नहीं होगा।

हालांकि कोई पंडित-पुजारी हृदय से 24 घंटे भगवान की पूजा नहीं करना चाहता। वह भी एक सांसारिक व्यक्ति की तरह जीवन यापन की दृष्टि से या पद-प्रतिष्ठा की दृष्टि से मंदिर से जुड़ा रहता है। जिस दिन-हर व्यक्ति में ये जागरूकता आ गई कि हमारे भीतर भगवान हैं, हमारे चारों ओर भगवान हैं, तो मंदिर की हमें कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी। पंडित-पुजारी सारे भूखे मर जाएँगें। हमारी बेहोशी, अज्ञानता इनका भोजन है और हमारी जागरूकता इनके लिए कंगाली है। किसी भी पुजारी को कॉरपोरेट जगत में दो लाख मासिक तनख्वाह दे दो तो वह मंदिर और पूजा-पाठ को एक मिनट में छोड़ देगा और सिर्फ जागा हुआ, मोह-माया से मुक्त, सच्चा पुजारी ही मंदिर से जुड़ जाएगा। जिसने भीतर के धन को जान लिया है।

हर मानव को आज नहीं तो कल यह समझना ही पड़ेगा कि आज तक कोई समृद्धि, कोई शांति, कोई आनन्द, कोई स्वास्थ्य, कोई प्रेम बाहर की वस्तुओं से नहीं आया। ये भीतरी संपदा है, भीतर से ही उत्पन्न होती हैं, आपसे ही उत्पन्न होती हैं, आप ही उसके रचनाकार हैं। आपका गुडलक आपकी अज्ञानता, कमजोरियाँ, भय, निर्भरता जैसे पत्थरों के नीचे दबी हुई है। उखाड़िए इन सभी पत्थरों को। आप ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश हैं, आप ही सबसे बड़े राशि-रत्न हैं, पुखराज, रूद्राक्ष हैं। स्वयं को पहचानिए! तुम्ही सबसे बड़े ताबीज, श्रीयंत्र (धन के रचयिता) हो।

उठो जागो तुम्हारे और परमात्मा के बीच में कोई नहीं है। तुम हो, तुम्हारे पास इच्छाएँ हैं, सपने हैं, दूर-दृष्टि है, असीमित क्षमताएँ हैं, कर्म करने की ताकत है, हिम्मत है, अवचेतन मन है, आकर्षण के नियम हैं, प्रचुरता से भरा ब्रह्माण्ड है, तुम्हारा जीवन रूपी उपहार ही सबसे बड़ा गुडलक है। इसे परमात्मा नहीं संवारता बल्कि हमें ही संवारना पड़ता है। वह पत्थर देता है हमें मूर्तियाँ बनानी है। वह जंगल देता है, हमें बगीचे बनाने हैं। वह सामग्री देता है, मनचाहे महल हमें बनाने हैं और इन्हें अगर आप बनाना चाहते ही हैं तो दुनिया की कोई ताकत आपको रोक नहीं सकती।

जितने भी दुनिया में गुडलक के सामान हैं उन में कोई गुडलक नहीं होता। हम जो स्वीकार करते हैं वह गुडलक बन जाता है। विदेशी लोग, चीनी लोग, अफ्रीकन लोग, मुसलमान लोग, श्रीयंत्र, स्वास्तिक, गणेश, लक्ष्मी या अन्य भारतीय गुडलक सामग्री स्वीकार नहीं करते इसलिए वह उनके लिए गुड़लक का कारण नहीं बनता। अंततया असली नियम तो ये है कि जो वस्तु हम स्वीकार कर लेते हैं वही हमारे अवचेतन मन को प्रभावित करती है। किसी गुडलक सामग्री में कोई दम नहीं होता, उनमें कोई शक्ति नहीं होती। हमारा अवचेतन मन जिसको स्वीकार कर लेता है उसमें शक्ति आ जाती है। तो असली रचयिता तो अवचेतन मन है जो इन गुडलक सामग्री पर भरोसा नहीं करता उसका भी कारण सिर्फ अचेतन मन है, उसका विश्वास है। इसलिए हजारों गुडलक सामग्री खरीदकर भी आपको कभी गुडलक नहीं मिल सकता। जिस दिन आपने अवचेतन मन को समझ लिया, उसको उपयोग करने की कला सीख ली, आपने आकर्षण के नियम को जान लिया तो समझ लेना कि आप गुडलक क्रिएटर (रचयिता) हो गए और गुडलक बनाने की फैक्ट्री आपके हाथ लग गई। जब चाहें, जितना चाहें गुडलक पैदा करते रहें। दुनिया की कोई शक्ति आपको रोक नहीं सकती!

– डॉ. एन. के. शर्मा